

### मातृ-पितृ पूजन दिवस कार्यक्रम

इस भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर जन्मे भारत माँ के आप सब सपूतों को नमस्कार  
आदरणीय प्राचार्य श्री, शिक्षकों और आप सभी प्यारे विद्यार्थियों के हृदय में बसे परमात्म देव को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम !

क्या आप जानते हैं कि आपको भगवान ने एक गिफ्ट दिया है ? (नहीं) नहीं पता ! ठीक है हम आपको बताते हैं...

बच्चो ! क्या आप सब जानते हैं कि भगवान श्रीगणेश, श्रवणकुमार, भक्त पुंडलिक इतने महान कैसे बने कि आज भी इतिहास उनकी महिमा गा रहा है ? अपने माता-पिता की सेवा, आदर-सत्कार व पूजन करके ! तो क्या आप भी इन सबकी तरह महान बनना चाहोगे ? हाँ ।

### माता-पिता पृथ्वी के देव

बच्चो ! भगवान सूर्यदेव और चंद्रमा कहाँ के देव हैं ? आकाश के । बिल्कुल सही । ऐसे ही पृथ्वी के देव हैं हमारे माता-पिता । माता-पिता ने हमको जन्म दिया और हमारे पालन-पोषण के लिए कितने कष्ट उठाते हैं और हमारे आचार्यों, गुरुओं ने हमें श्रेष्ठ शिक्षा दी है । इनकी पूजा-अर्चना व सेवा करने से छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी महान बन जाता है, चिर-आदरणीय बन जाता है । जो माता-पिता और गुरुजनों का आदर-सत्कार करता है, संसार उसका आदर-सत्कार करता है । भगवान गणेशजी, भगवान राम, भीष्म पितामह हों या एक साधारण-सा बालक श्रवणकुमार ही क्यों न हो, जिसने भी ये सिद्धांत अपनाया वह आज भी सबके दिलों में चम-चमा रहे हैं ।

### वेलेंटाईन डे क्या ?

अच्छा बच्चो ! १४ फरवरी को क्या होता है ? (वेलेंटाईन डे ।) अच्छा अब ये बताओ कि ये क्यों मनाया जाता है ? (किसीको नहीं पता)

किसी संत ने एक लड़के से भी पूछा था कि : भाई ये तुम वेलेंटाईन डे क्यों मनाते हो ? इसके पीछे क्या अर्थ है ? उस लड़के ने कहा : पता नहीं, सब मनाते हैं इसलिए हम भी मनाते हैं । ये बात तो बकरियों जैसी हो गयी । बकरियाँ पता है न क्या करती हैं एक के पीछे एक चलती हैं । अगर एक बकरी कुँ में जाकर गिरती है तो सभी बकरियाँ बिना सोचे उसके पीछे कुँ में जाकर गिर जाती हैं । यही गलती आज कई बच्चों से भी हो रही है कि विदेशों में जो किया जाता है वह बिना सोचे-समझे करने लगते हैं और विनाश की खाई में गिरते जा रहे हैं । क्या ऐसा करना सही है ? क्या हम बिना बुद्धिवाले पशु हैं ? नहीं न ।

तुमने सुना होगा कई बार कुछ लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे को कहते हैं प्रेम अंधा होता है, मगर कैसे ? कोई बतायेगा ? अच्छा ये बताओ, जब कोई लड़का लड़की को या लड़की लड़के को प्रेम करती है तो उसे देखकर ही करती है ? सही । तो फिर प्रेम अंधा कैसे ? अंधा प्रेम होता है माता-पिता का क्योंकि जब हम पेट में होते हैं, उन्होंने हमें देखा भी नहीं होता है कि हम कैसे हैं ? हम काले हैं कि गोरे हैं, लम्बे हैं कि चौड़े हैं, होशियार हैं कि बुद्धू हैं मगर फिर भी वे हमें दुनिया में सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं ।

दूसरा आजकल के लड़के-लड़कियाँ ये नारा भी लगाते हैं कि 'पहला प्यार कभी भुलाया नहीं जाता' तो फिर पता नहीं अपने माँ-बाप का प्यार कैसे भूल जाते हैं ? क्यों जी सही है न ?

माता-पिता का आदर-सत्कार करने से जिनको फायदा हुआ ऐसे तो हमारे पास सैकड़ों अनुभव हैं मगर वेलेंटाईन डे मनाने से किसीको कोई फायदा हुआ हो ऐसा किसीके पास एक भी उदाहरण

नहीं होगा । वैसे तो माता-पिता व गुरुजनों का रोज आदर-पूजन व सत्कार करना चाहिए मगर पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से हमारी महान भारतीय परम्पराएँ विनष्ट-सी हो रही हैं । जहाँ हमारी भारतीय संस्कृति में रोज माता-पिता व गुरुजनों का पूजन किया जाता था, ऐसी महान परम्परा को मदर्स डे, फादर्स डे के रूप में केवल एक दिन में लाकर संकुचित कर दिया गया । क्या माता-पिता को प्रेम करने का केवल एक ही दिन होना चाहिए, बोलो बच्चो ? (नहीं न) इसलिए आज से हम प्रतिज्ञा कर लें कि हम रोज अपने माता-पिता व गुरुजनों का आदर-पूजन करेंगे और १४ फरवरी को तो विशेष रूप से करेंगे ।

करुण वातावरण : बच्चो क्या कभी हमने सोचा है कि माता-पिता का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ?

कोई माता-पिता की परिभाषा बता सकता है ?

चलो हम बताते हैं...

पिता की परिभाषा : जो हमारी खुशी के लिए सब कुछ हारने के लिए तैयार रहते हैं ।

माँ की परिभाषा : जो हमारा हर दुःख हर लेती है ।

जैसे सूरज-चाँद के बिना सारी दुनिया काली है, जैसे शक्कर बिना मिठाई बेकार है, जैसे प्राण बिना शरीर बेजान होते हैं, ऐसे ही माता-पिता के बिना हमारा जीवन भी सुनसान है ।

ईश्वर ने बहुत ही कृपा करके हमें माता-पिता दिये हैं, इनकी खूब कद्र करनी चाहिए । माता-पिता क्या होते हैं जानना है तो जाकर उनसे पूछो जिनके माता-पिता नहीं हैं । कैसे उनको एक पैसे के लिए, एक काम के लिए दर-दर हाथ फैलाने पड़ते हैं । जब रात को कहीं दर्द होता है तो उनके पास आँसूओं के सिवा कोई नहीं आता ।

हमारे पास माता-पिता दोनों हैं मगर जब स्कूल के लिए माँ ने मनपसंद टिफिन नहीं बनाया तो हम क्या करते हैं ? टिफिन खाते ही नहीं और स्कूल से आकर वह टिफिन माँ के आगे फेंककर गुस्सा करके कहते हैं, नहीं खाना मुझे टिफिन, रोज एक ही चीज बनाकर देती हो ।

आपने तो गुस्सा कर दिया मगर इसके पीछे माँ की कितनी मेहनत, कितनी भावनाएँ, कितने अरमान छिपे होते हैं क्या आपने कभी सोचा ? आपने कभी अपने माता-पिता की दिनचर्या पर ध्यान दिया है ? आपकी माँ सुबह आपसे पहले उठती है, आपके लिए नाश्ता बनाती है, रात को ही आपका युनिफार्म धोकर, प्रेस करके रखती है, जूते पॉलिश करके रखती है कि कहीं आपको पनिशमेंट न मिले । कितना प्रेम से आपके लिए नाश्ता बनाती है । आपके जाने के बाद घर का सारा काम करती है, फिर दोपहर का भोजन बनाती है, रात को भी आपको सुलाकर फिर ही सोती है । सारा दिन काम में लगी रहती है मगर कभी नहीं कहती है कि बेटा आज मैं थक गयी हूँ, मैं बीमार हूँ तुम्हारे लिए टिफिन नहीं बनाऊँगी, तुम बाहर खा लेना । कहा कभी ? (नहीं)

तुम्हारी खुशी के लिए अपना सारा गम भूल जाती है मगर जब आप भरा हुआ टिफिन घर वापस लाते हैं तो आपने कभी सोचा है कि आपकी माँ के दिल पर क्या बीतती होगी ? माँ का दिल रोता है इसलिए नहीं कि इतनी मेहनत करके टिफिन बनाया था और खाया नहीं बल्कि वो रोती है यह सोचकर कि मेरे बेटे ने आज सुबह से कुछ नहीं खाया, उसे कितनी भूख लगी होगी !

पिताजी सुबह से लेकर शाम तक कमाने के लिए जाते हैं केवल हमारी पढ़ाई, हमारे उत्तम भविष्य के लिए । अपना पूरा जीवन हमारे लिए लगा लेते हैं मगर एक मनपसंद चीज अगर उन्होंने नहीं लाकर दी तो हम क्या कहते हैं : आप हमेशा ऐसा ही करते हो, मुझे आपसे कोई बात नहीं करनी । ऐसे कोमलहृदय माता-पिता पर हम कितना गुस्सा करते हैं, उनको अनजाने में कितना

दुःख दे देते हैं !

जब कभी हमें थोड़ी चोट लग जाती है या थोड़ा-सा पेटदर्द क्या होता है माता-पिता कितना परेशान हो जाते हैं। अच्छे-से-अच्छे डॉक्टर के पास हमारा इलाज कराते हैं, रात भर हमारे लिए जागते हैं, हमारे लिए चाहे जो करना पड़े कर गुजरते हैं, मगर मुँह से कभी उफ तक नहीं करते, कभी नहीं कहते हम थक गये ।

क्या उनके प्रति हमारा ऐसा व्यवहार सही है ? नहीं ।

\* गीले में खुद सोके सूखे में सुलाया हमको । आँसू अपने पोंछ के हँसाया हमको ।

पेट अपना काटकर पड़ाया हमको, भूखे खुद रहकर खिलाया हमको ।

दुःखी कभी न करना उन हस्तियों को, ईश्वर ने माँ-बाप बनाया जिनको ॥

\* कहते हैं भगवान हर घर में आना चाहते थे मगर कैसे आयें ? इसलिए उन्होंने माता-पिता बनाये । माता-पिता घर-घर में बस रहे भगवान ही हैं ।

\* मंदिर में वो भगवान हैं जिन्हें हमने बनाया है, मगर घर में वो भगवान हैं जिन्होंने हमें बनाया है । अगर हमारे कारण यदि हमारे माता-पिता की आँखों में आँसू आयें तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ? हमने तो भगवान को ही दुःखी कर दिया ।

\* दुनिया में हर चीज दुबारा मिल सकती है मगर माता-पिता नहीं मिल सकते ।

तो अभी से संकल्प कर लो कि आज के बाद हम कभी भी हमारे माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार नहीं करेंगे । वो हमें जैसे रखेंगे, हम वैसे ही रहेंगे, कभी कोई शिकायत नहीं करेंगे । वे हमारे परम हितैषि हैं ।

पूजन विधि : तो चलो आज हम मनायें 'सच्चा प्रेम दिवस' । शास्त्रों में तीन देवों का वर्णन आता है : मातृदेवो भव, पितृदेवो भव और आचार्यदेवो भव । अभी आपके माता-पिता आपके पास नहीं हैं, मगर शिक्षक भी हमारी उन्नति में समान स्थान रखते हैं । अतः आज हम अपने शिक्षकों के साथ ही यह पवित्र दिन मनायेंगे और घर जाकर ऐसा ही पूजन अपने माता-पिता का करेंगे ।

(कार्यक्रम की शुरुआत ऐसे करें : )

किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत भगवद्-ध्यान, भगवन्नाम से करनी चाहिए ।

कमर सीधी, गर्दन सीधी, हाथों की उँगलियाँ ज्ञान मुद्रा में, आँखें बंद, मिलकर करेंगे ॐकार गुँजन, तीन मंत्रोच्चारण : ॐ गं गणपतये नमः । ॐ श्री सरस्वत्यै नमः । ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

(बच्चों से भी बुलवायें ) मैं बालक तेरा प्रभु, जानूँ न योग न ध्यान ।

प्रभुकृपा मिलती रहे, दे दो यह वरदान ॥

(सूचना : सम्पूर्ण विधि संस्कृति सैनिक डीवीडी से देखें ।)

माता-पिता का मानसिक पूजन : अभी जैसा पूजन आपने शिक्षकों का किया अब मन-ही-मन वैसा पूजन अपने माता-पिता का करेंगे । सबसे पहले अपने माता-पिता को आसन पर बिठायें, अब तिलक करें, सिर पर अक्षत और पुष्प रखें । अब माता-पिता को फूल-माला पहनायेंगे । अब करेंगे आरती । आरती करने के बाद करें परिक्रमा । अब पृथ्वी का स्वर्ग माँ की गोद में आप अपनी सारी चिंताएँ, जिम्मेदारियाँ, शरम छोड़कर निश्चिंत होकर लेट जायें । बहुत ही मुद्दतों बाद ऐसा समय

आया है कि आप एकदम निश्चिंत हो पाये हो क्योंकि आज आपको आपके सच्चे आश्रय का पता चला । मानो पृथ्वी का स्वर्ग है माँ की गोद !

कैसा सुखद एहसास ! कितनी मधुर घड़ियाँ ।

आज तुम्हारे माता-पिता तुम पर बहुत ही खुश हो रहे हैं और वे आपको आशीर्वाद दे रहे हैं ... तुम दीर्घायु हो । तुम महान बनो । तुम हर कार्य में सफल हो । तुम सुखी और स्वस्थ रहो और तुम हमेशा हमारे पास रहो । कहते-कहते वे भावों से भर गये, तुम भी रो पड़े और उन्होंने आपको गले लगा लिया ।

ध्यान में ही मात-पिता को हाथ जोड़कर प्रार्थना : हे मेरे माता-पिता ! हे मेरे जन्मदाता ! जाने-अनजाने में यदि हमसे कोई भूल हो गयी हो या हमने आपका दिल दुखाया हो तो कृपा करके हमें माफ कर दीजिये । हम आपको वचन देते हैं कि आज के बाद हम कभी भी आपके दिल को ठेस नहीं पहुँचायेंगे । आप हम पर अपना प्रेम सदा ऐसे ही बनाये रखना ।

बच्चों से उच्चारण करवायें - मातृदेवो । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ॥

संकल्प : आज के बाद हम १४ फरवरी को केवल मातृ-पितृ पूजन दिवस ही मनायेंगे । और रोज अपने माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों व गुरुजनों को प्रणाम करेंगे ।

(इसका कोईस ओवर नहीं करायें तो चलेगा ।)

अतिरिक्त मैटर :

\* माता-पिता की खुशी किसमें होती है ?

उत्तर : सिर्फ हमारी खुशी और सफलता में । वे खुश होते हैं हमें खुश देखकर ।

और हम किससे खुश होते हैं ? अपनी मनपसंद चीजों के मिलने से.., कोई रोक-टोक न हो ।

\* जन्म कभी दुबारा नहीं मिलता, फूल कभी दुबारा नहीं खिलते ।

मिलते हैं जीवन में लोग हजारों पर, गलतियाँ माफ करनेवाले माँ-बाप नहीं मिलते ॥

\* माँ एक ऐसी बैंक हैं जहाँ हम अपना हर दुःख, हर परेशानी जमा करवा सकते हैं और पिता ऐसा क्रेडिट कार्ड हैं जिनके पास बैलेंस न होते हुए भी हमारे सपने पूरे करने की कोशिश करते हैं ।

\* हर रिश्ते में मिलावट देखी, कच्चे रंगों की सजावट देखी ।

लेकिन माँ के चेहरे पर न कभी थकावट देखी, न शिकायत देखी ॥